



Social Gravity: International Journal of Social Sciences and Humanities (SGIJSH)

(An International Peer-Reviewed (Refereed) Journal)

Website-<https://socialgravity.nobleinkresearch.com/>

Email- editor@socialgravity.nobleinkresearch.com

ISSN Online: 3139-9312

ISSN Print: 3139-9304



राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पूर्वानुमान: अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्यों की भूमिका

Rahul Kumar¹, Dr. Kumud Rani², *

¹ Research Scholar, Department of Education,
Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttar Pradesh, India

² Assistant Professor, Department of Education
D.N. College, Meerut, Uttar Pradesh, India

*Corresponding Author: rahulprof94@gmail.com, mahikumud@gmail.com

Received: 05 July 2026, Revised: 15 August 2026, Accepted: 30 August 2026, Available Online: 08 September 2026

<https://doi.org/10.68219/0ghp9h32>

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था को विद्यार्थी-केंद्रित, समग्र, बहुविषयक, अनुभवात्मक एवं मूल्य-आधारित अधिगम की दिशा में पुनर्संरचित करने पर बल देती है। इस परिवर्तित शैक्षिक परिदृश्य में स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि केवल बौद्धिक क्षमताओं का परिणाम न होकर उनकी अभिरुचि, अभिप्रेरणा तथा मूल्यों जैसे मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारात्मक कारकों से भी प्रभावित होती है। प्रस्तुत वैचारिक अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में इन तीनों कारकों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में संभावित भूमिका का सैद्धांतिक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। अध्ययन में अभिरुचि को अधिगम में सक्रिय सहभागिता एवं विषय के प्रति सकारात्मक जुड़ाव, अभिप्रेरणा को अधिगम के लिए प्रयास, निरंतरता एवं लक्ष्य-उन्मुखता, तथा मूल्यों को उत्तरदायित्व, अनुशासन, नैतिकता एवं आत्म-नियमन से संबद्ध किया गया है। उपलब्ध सैद्धांतिक एवं शोध-साहित्य के आधार पर एक वैचारिक मॉडल प्रस्तावित किया गया है, जिसमें अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार एवं शैक्षिक सहभागिता के माध्यम से शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों के रूप में परिकल्पित किए गए हैं। अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विद्यार्थी-केंद्रित एवं समग्र शिक्षा-दृष्टि इन कारकों को विकसित करने के लिए अनुकूल शैक्षिक वातावरण प्रदान कर सकती है। लेख के अंत में उच्च शिक्षा संस्थानों एवं शिक्षकों के लिए रुचि-आधारित शिक्षण, अभिप्रेरणा-संवर्धन, अनुभवात्मक अधिगम तथा मूल्य-आधारित शिक्षा से संबंधित शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत किए गए हैं। यह वैचारिक ढाँचा भविष्य में अनुभवजन्य अध्ययनों के माध्यम से परीक्षण एवं परिष्करण के लिए आधार प्रदान कर सकता है।

प्रमुख शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; स्नातक विद्यार्थी; शैक्षिक उपलब्धि; अभिरुचि; अभिप्रेरणा; मूल्य; विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा; समग्र शिक्षा; उच्च शिक्षा; वैचारिक मॉडल

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय विकास की आधारभूत प्रक्रिया है। उच्च शिक्षा के स्तर पर इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करने वाले संस्थान नहीं हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता, आत्मनिर्भरता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा नैतिक चेतना के विकास के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इस दृष्टि से किसी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों या ग्रेड तक सीमित करना शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को संकुचित कर देता है। शैक्षिक उपलब्धि वास्तव में विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल, अधिगम में सहभागिता, लक्ष्य-उन्मुखता, आत्म-अनुशासन तथा सीखने की निरंतरता जैसे अनेक परस्पर संबद्ध आयामों की अभिव्यक्ति है। अतः उच्च शिक्षा में शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए उन व्यक्तिगत एवं शैक्षिक कारकों की पहचान आवश्यक है जो विद्यार्थियों के अधिगम को दिशा और गति प्रदान करते हैं।

भारतीय उच्च शिक्षा के इसी व्यापक संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) एक महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। नीति शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, बहुविषयक, विद्यार्थी-केंद्रित एवं कौशल-उन्मुख बनाने की दिशा में बल देती है। विशेष रूप से उच्च शिक्षा के संदर्भ में यह विद्यार्थियों को अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुरूप विषयों के चयन, बहुविषयक अधिगम, अनुभवात्मक एवं सक्रिय शिक्षण, आलोचनात्मक चिंतन तथा भारतीय ज्ञान एवं मूल्यों से जुड़ने के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता पर बल देती है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थी को शिक्षा-प्रक्रिया के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में देखने के बजाय एक सक्रिय, स्वायत्त एवं उत्तरदायी शिक्षार्थी के रूप में स्थापित किया गया है। ऐसी दृष्टि में शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण केवल संस्थागत संसाधनों या शिक्षक-केंद्रित शिक्षण से नहीं, बल्कि विद्यार्थी की आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों और अधिगम संबंधी व्यवहारों से भी जुड़ जाता है।

इस संदर्भ में **अभिरुचि** एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरती है। जब विद्यार्थी किसी विषय, गतिविधि या अधिगम-अनुभव में वास्तविक रुचि अनुभव करता है, तो उसके सीखने की प्रक्रिया अधिक सक्रिय, अर्थपूर्ण एवं निरंतर हो सकती है। अभिरुचि विद्यार्थी को केवल निर्धारित शैक्षिक कार्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित नहीं करती, बल्कि उसे विषय के साथ गहराई से जुड़ने, प्रश्न पूछने, अतिरिक्त जानकारी खोजने और अधिगम में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता एवं पसंद के अनुरूप अधिक लचीले एवं बहुविषयक शैक्षिक अवसरों पर दिया गया बल इस संबंध को और अधिक प्रासंगिक बनाता है। इसलिए विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को समझने में उसकी विषयगत एवं अधिगम संबंधी अभिरुचि को एक संभावित पूर्वानुमानक के रूप में देखना आवश्यक है।

इसी प्रकार **अभिप्रेरणा** अधिगम की दिशा, तीव्रता और निरंतरता को प्रभावित करने वाला प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारक है। समान शैक्षिक परिस्थितियों में उपस्थित विद्यार्थी अपने प्रदर्शन में भिन्नता प्रदर्शित कर सकते हैं, क्योंकि उनके लक्ष्य, अपेक्षाएँ, आत्म-प्रभावकारिता, उपलब्धि की आकांक्षा तथा सीखने के प्रति आंतरिक एवं बाह्य प्रेरक भिन्न हो सकते हैं। विशेष रूप से आंतरिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी को सीखने की प्रक्रिया को स्वयं में सार्थक

अनुभव करने में सहायता कर सकती है, जबकि लक्ष्य-उन्मुख अभिप्रेरणा उसे कठिनाइयों के बावजूद प्रयास जारी रखने के लिए प्रेरित कर सकती है। उच्च शिक्षा के परिवर्तित स्वरूप में, जहाँ विद्यार्थियों से अधिक स्वायत्त अधिगम, आत्म-नियमन एवं निरंतर प्रयास की अपेक्षा की जाती है, अभिप्रेरणा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। मूल्य इस वैचारिक संरचना का तीसरा महत्वपूर्ण आयाम हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान एवं रोजगारपरक दक्षताओं का विकास करना नहीं है; यह विद्यार्थियों में नैतिकता, उत्तरदायित्व, अनुशासन, सह-अस्तित्व, सत्यनिष्ठा, संवेदनशीलता तथा सामाजिक प्रतिबद्धता जैसे मानवीय गुणों के विकास से भी संबद्ध है। विद्यार्थी के मूल्य उसके निर्णयों, व्यवहार, शैक्षिक प्रतिबद्धता और दूसरों के प्रति उसके दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरणतः उत्तरदायित्व एवं आत्म-अनुशासन जैसे मूल्य नियमित अध्ययन, समय-प्रबंधन और शैक्षिक दायित्वों के निर्वहन को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इसी प्रकार नैतिक मूल्यों की सुदृढ़ता शैक्षणिक ईमानदारी तथा जिम्मेदार अधिगम व्यवहार को समर्थन दे सकती है। इस दृष्टि से मूल्य शिक्षा को शैक्षिक उपलब्धि से अलग कोई बाहरी आयाम मानने के बजाय विद्यार्थी के समग्र विकास एवं प्रभावी अधिगम से संबद्ध एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

अभिरुचि, अभिप्रेरणा और मूल्यों को अलग-अलग कारकों के रूप में देखने के बजाय इनके अंतर्संबंधित स्वरूप को समझना अधिक उपयोगी हो सकता है। अभिरुचि विद्यार्थी को अधिगम की ओर आकर्षित कर सकती है, अभिप्रेरणा उसे अधिगम की प्रक्रिया में प्रयास एवं निरंतरता बनाए रखने के लिए प्रेरित कर सकती है, जबकि मूल्य उसके अधिगम व्यवहार को उत्तरदायी एवं आत्म-अनुशासित दिशा प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार ये तीनों कारक मिलकर विद्यार्थी की शैक्षिक सहभागिता, अधिगम संबंधी व्यवहार एवं उपलब्धि के लिए एक मनो-शैक्षिक आधार निर्मित कर सकते हैं। यह परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की उस व्यापक अवधारणा के अनुरूप है जिसमें शिक्षा को विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक एवं व्यावहारिक विकास की एक समेकित प्रक्रिया के रूप में देखा गया है। हालाँकि शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित साहित्य में विद्यार्थी की अभिरुचि, अभिप्रेरणा और मूल्यों पर स्वतंत्र रूप से पर्याप्त चर्चा उपलब्ध है, फिर भी इन तीनों आयामों को एक समेकित वैचारिक ढाँचे के अंतर्गत रखते हुए स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संभावित पूर्वानुमान से जोड़कर समझने की आवश्यकता बनी हुई है। विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पश्चात भारतीय उच्च शिक्षा में विद्यार्थी की स्वायत्तता, शैक्षिक लचीलापन, बहुविषयक अधिगम, अनुभवात्मक अधिगम तथा मूल्य-आधारित शिक्षा को प्राप्त हो रहे महत्व ने इस विषय को नई प्रासंगिकता प्रदान की है। अतः केवल यह जानना पर्याप्त नहीं है कि विद्यार्थी कितना अच्छा शैक्षिक प्रदर्शन करता है, बल्कि यह समझना भी आवश्यक है कि उसकी अभिरुचि, अधिगम के प्रति अभिप्रेरणा तथा मूल्य-आधारित दृष्टिकोण उसके शैक्षिक अनुभव, अधिगम व्यवहार और उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत वैचारिक अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्यों की संभावित भूमिका का सैद्धांतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य इन तीनों कारकों की अवधारणात्मक प्रकृति को स्पष्ट करना, शैक्षिक उपलब्धि के साथ उनके संभावित संबंधों को समेकित रूप से समझना तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विद्यार्थी-केंद्रित एवं समग्र शिक्षा-दृष्टि के साथ इनके संबंध को स्थापित करना है। इसके लिए लेख एक वैचारिक मॉडल विकसित करता है जिसमें अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य प्रमुख मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारात्मक पूर्वानुमानकों के रूप में तथा शैक्षिक सहभागिता एवं अधिगम व्यवहार संभावित मध्यवर्ती प्रक्रियाओं के रूप में परिकल्पित किए गए हैं। इस प्रकार

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख योगदान किसी अनुभवजन्य निष्कर्ष का दावा करना नहीं, बल्कि एक सैद्धांतिक एवं वैचारिक आधार विकसित करना है, जिसके माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप स्नातक शिक्षा में विद्यार्थियों की अभिरुचि, अभिप्रेरणा और मूल्य-आधारित व्यवहार को शैक्षिक उपलब्धि से जोड़कर समझा जा सके। यह वैचारिक ढाँचा शिक्षकों, उच्च शिक्षा संस्थानों तथा शिक्षा-नीति के कार्यान्वयन से जुड़े हितधारकों को विद्यार्थियों की उपलब्धि को केवल परिणाम-केंद्रित दृष्टिकोण से देखने के बजाय उनके समग्र अधिगम अनुभव और व्यक्तिगत विकास के संदर्भ में समझने के लिए उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है। साथ ही, यह भविष्य में होने वाले अनुभवजन्य अध्ययनों के लिए संभावित चर, उनके पारस्परिक संबंधों तथा शोध-परिकल्पनाओं की पहचान करने में भी सहायक हो सकता है।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और स्नातक शिक्षा का बदलता परिदृश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक व्यापक परिवर्तन की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। यह नीति शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया के रूप में न देखकर व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक, रचनात्मक एवं व्यावहारिक विकास की समग्र प्रक्रिया के रूप में स्थापित करती है। उच्च शिक्षा के संदर्भ में यह दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्नातक स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था से आगे बढ़कर अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्त, उत्तरदायी एवं निर्णय लेने में सक्षम शिक्षार्थी के रूप में विकसित हो रहे होते हैं। इस अवस्था में उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर केवल पाठ्यक्रम और शिक्षण-पद्धति का ही प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि वे किस प्रकार सीखना चाहते हैं, सीखने के प्रति उनकी आंतरिक प्रेरणा कितनी प्रबल है तथा उनके व्यवहार को कौन-से मूल्य निर्देशित करते हैं, ये सभी पक्ष महत्वपूर्ण हो जाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा में ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देती है जिसमें विद्यार्थियों को अपनी रुचि, क्षमता एवं आकांक्षाओं के अनुरूप अधिगम के अवसर प्राप्त हों। परंपरागत उच्च शिक्षा व्यवस्था में विषयों एवं पाठ्यक्रमों के अपेक्षाकृत कठोर विभाजन के कारण विद्यार्थियों के पास अपनी व्यक्तिगत अभिरुचियों के अनुरूप अधिगम-पथ चुनने के सीमित अवसर हो सकते थे। इसके विपरीत नई शिक्षा नीति बहुविषयक शिक्षा, विषय चयन में लचीलापन तथा विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान को परस्पर जोड़ने की संभावनाओं को महत्व देती है। ऐसी व्यवस्था विद्यार्थी को अपने अधिगम में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देती है। जब विद्यार्थी को अपनी रुचि के विषयों एवं अधिगम गतिविधियों से जुड़ने की स्वतंत्रता मिलती है, तो उसके लिए सीखने की प्रक्रिया अधिक अर्थपूर्ण, स्वाभाविक एवं आकर्षक बन सकती है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की लचीली एवं विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टि अभिरुचि को उच्च शिक्षा की प्रभावी अधिगम प्रक्रिया से जोड़ने के लिए अनुकूल आधार प्रदान करती है।

नीति द्वारा प्रस्तावित बहुविषयक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को किसी एक संकीर्ण विषयगत सीमा तक सीमित रखने के बजाय ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के बीच अंतर्संबंधों को समझने के अवसर प्रदान करना है। विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, कला, व्यावसायिक शिक्षा तथा अन्य ज्ञान क्षेत्रों के बीच संवाद विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में सहायक हो सकता है। बहुविषयक अधिगम विद्यार्थियों को अपनी विविध रुचियों को पहचानने और उन्हें शैक्षिक अनुभवों में अभिव्यक्त करने का अवसर देता है। इसके परिणामस्वरूप अधिगम केवल परीक्षा की तैयारी तक सीमित न रहकर जिज्ञासा, अन्वेषण एवं रचनात्मक सहभागिता की प्रक्रिया में परिवर्तित हो सकता है। इस संदर्भ में विद्यार्थी की अभिरुचि को शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में समझना उचित प्रतीत होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अधिगम को अधिक सक्रिय, अनुभवात्मक एवं कौशल-आधारित बनाने पर भी बल दिया गया है। केवल व्याख्यान सुनने और निर्धारित पाठ्य-सामग्री को याद करने के स्थान पर विद्यार्थियों को गतिविधियों, परियोजनाओं, चर्चा, प्रयोग, समस्या-समाधान तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। ऐसी शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाती है। सक्रिय सहभागिता के माध्यम से विद्यार्थी अपने अधिगम को अधिक व्यक्तिगत एवं अर्थपूर्ण अनुभव के रूप में ग्रहण कर सकते हैं। इस प्रकार अनुभवात्मक अधिगम न केवल विषय की समझ को गहरा कर सकता है, बल्कि सीखने के प्रति सकारात्मक अभिरुचि एवं निरंतर सहभागिता को भी प्रोत्साहित कर सकता है।

उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की बढ़ती स्वायत्तता के साथ **अभिप्रेरणा** का महत्व भी बढ़ जाता है। जब विद्यार्थी को अपने विषय, पाठ्यक्रम, अधिगम-पद्धति तथा भविष्य की दिशा से संबंधित अनेक निर्णय लेने होते हैं, तब केवल बाहरी नियंत्रण के आधार पर प्रभावी अधिगम संभव नहीं होता। विद्यार्थी में सीखने की आंतरिक इच्छा, उपलब्धि की आकांक्षा, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता तथा कठिनाइयों के बीच प्रयास जारी रखने की क्षमता आवश्यक हो जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण ऐसी ही स्वायत्त एवं सक्रिय अधिगम संस्कृति को प्रोत्साहित करता है। इस दृष्टि से अभिप्रेरणा को विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि के निर्माण में सहायक एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आधार माना जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान एवं कौशल के साथ-साथ **मानवीय एवं नैतिक मूल्यों** के विकास को भी महत्वपूर्ण मानती है। शिक्षा का व्यापक उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जो अपने व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र के प्रति भी उत्तरदायित्व का अनुभव करें। सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, अनुशासन, सहानुभूति, सहयोग, सम्मान, संवेदनशीलता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य विद्यार्थी के दैनिक व्यवहार और शैक्षिक जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तरदायित्व की भावना विद्यार्थी को अपने अध्ययन के प्रति गंभीर बना सकती है, अनुशासन नियमित अध्ययन एवं समय-प्रबंधन में सहायक हो सकता है तथा सत्यनिष्ठा शैक्षणिक ईमानदारी को मजबूत कर सकती है। इस प्रकार मूल्य शिक्षा केवल नैतिक विकास का माध्यम नहीं है, बल्कि विद्यार्थी के समग्र शैक्षिक व्यवहार से भी गहराई से जुड़ी हुई है।

नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें शिक्षा के उद्देश्य को केवल रोजगार प्राप्त करने की क्षमता तक सीमित नहीं रखा गया है। रोजगारपरक दक्षताओं के साथ रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, संचार-कौशल, समस्या-समाधान, सामाजिक एवं नैतिक चेतना तथा आजीवन अधिगम की प्रवृत्ति को भी महत्व दिया गया है। यह व्यापक दृष्टिकोण शैक्षिक उपलब्धि की पारंपरिक अवधारणा को भी विस्तृत करता है। अब विद्यार्थी की सफलता को केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर देखने के बजाय उसके ज्ञान के अनुप्रयोग, कौशल, अधिगम में सक्रियता, आत्म-नियमन तथा सामाजिक एवं नैतिक विकास के संदर्भ में भी समझने की आवश्यकता है।

इस परिवर्तित परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका भी पुनर्परिभाषित होती है। शिक्षक केवल विषय-वस्तु प्रदान करने वाला व्यक्ति न रहकर मार्गदर्शक, सहायक, प्रेरक एवं अधिगम-सुविधाकर्ता की भूमिका निभाता है। ऐसी भूमिका में शिक्षक के लिए विद्यार्थियों की व्यक्तिगत अभिरुचियों को पहचानना, उनकी सीखने की आवश्यकताओं को समझना, उन्हें उपयुक्त प्रेरणा प्रदान करना तथा मूल्य-आधारित वातावरण का निर्माण करना महत्वपूर्ण हो जाता है। जब कक्षा में प्रश्न पूछने, विचार व्यक्त करने, प्रयोग करने, असफलताओं से सीखने और स्वतंत्र रूप से सोचने के अवसर उपलब्ध होते हैं, तो विद्यार्थी अधिक सक्रिय रूप से अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित हो सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का यह परिवर्तन केवल पाठ्यक्रम या शिक्षण-पद्धति में परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह **शिक्षा की पूरी संस्कृति में परिवर्तन** की अपेक्षा करता है। विद्यार्थी को शिक्षा-प्रक्रिया के केंद्र में रखना तभी सार्थक हो सकता है जब उसकी अभिरुचियों को सम्मान मिले, उसमें सीखने की आंतरिक अभिप्रेरणा विकसित हो तथा उसके शैक्षिक एवं सामाजिक व्यवहार को सकारात्मक मूल्यों का आधार प्राप्त हो। इस दृष्टि से अभिरुचि, अभिप्रेरणा और मूल्य तीन ऐसे महत्वपूर्ण आयाम हैं जो विद्यार्थी के अधिगम अनुभव को दिशा देने में परस्पर पूरक भूमिका निभा सकते हैं।

स्नातक शिक्षा के स्तर पर इन तीनों आयामों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इस अवस्था में विद्यार्थी अपने भविष्य के शैक्षिक एवं व्यावसायिक जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। यदि उन्हें अपनी रुचियों के अनुरूप सीखने के अवसर मिलते हैं, सीखने के लिए पर्याप्त आंतरिक अभिप्रेरणा प्राप्त होती है और उनके व्यवहार को उत्तरदायित्व एवं अनुशासन जैसे सकारात्मक मूल्यों का समर्थन मिलता है, तो उनके अधिगम की गुणवत्ता अधिक प्रभावी हो सकती है। इसके विपरीत केवल परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण, बाहरी दबाव या अंक प्राप्त करने की प्रवृत्ति विद्यार्थी के समग्र विकास को सीमित कर सकती है।

अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण आवश्यक है। ऐसा दृष्टिकोण जिसमें विद्यार्थी की अभिरुचि उसे सीखने की दिशा प्रदान करे, अभिप्रेरणा उसे प्रयास एवं निरंतरता प्रदान करे और मूल्य उसके शैक्षिक व्यवहार को उत्तरदायित्व एवं आत्म-अनुशासन की दिशा दें। इन तीनों आयामों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समग्र एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा-दृष्टि के साथ जोड़कर देखने से शैक्षिक उपलब्धि को अधिक व्यापक एवं सार्थक रूप में समझा जा सकता है। यही दृष्टिकोण आगे के वैचारिक विश्लेषण का आधार निर्मित करता है।

3. अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्यों की शैक्षिक भूमिका

स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए केवल उनकी बौद्धिक क्षमता, पूर्व शैक्षिक प्रदर्शन अथवा उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है। अधिगम एक ऐसी जटिल प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी की व्यक्तिगत रुचियाँ, सीखने की इच्छा, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता, प्रयास की निरंतरता तथा उसके व्यवहार को दिशा देने वाले मूल्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यार्थी एक ही शैक्षिक वातावरण में रहते हुए भी अधिगम के प्रति अलग-अलग प्रकार की सक्रियता और प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर सकते हैं। इस भिन्नता को समझने के लिए अभिरुचि, अभिप्रेरणा और मूल्यों के शैक्षिक महत्व का समग्र अध्ययन आवश्यक है।

3.1 अभिरुचि और शैक्षिक उपलब्धि

अभिरुचि से आशय किसी विषय, गतिविधि अथवा ज्ञान के क्षेत्र के प्रति विद्यार्थी के अपेक्षाकृत स्थायी आकर्षण, जिज्ञासा और सकारात्मक जुड़ाव से है। जब विद्यार्थी किसी विषय को अपने लिए अर्थपूर्ण एवं रुचिकर अनुभव करता है, तो उसके लिए उस विषय से संबंधित गतिविधियों में सक्रिय रूप से सम्मिलित होना अधिक सहज हो सकता है। अभिरुचि अधिगम को केवल बाहरी आवश्यकता के रूप में ग्रहण करने के बजाय उसे व्यक्तिगत अनुभव एवं जिज्ञासा से जोड़ने में सहायता करती है।

अभिरुचि का शैक्षिक महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह विद्यार्थी को किसी विषय के साथ अधिक समय तक जुड़ने तथा उसके बारे में अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकती है। रुचिकर विषय के अध्ययन

में विद्यार्थी केवल निर्धारित पाठ्य-सामग्री तक सीमित न रहकर प्रश्न पूछने, उदाहरण खोजने, चर्चा करने तथा विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो सकता है। इस प्रकार अभिरुचि अधिगम की गहराई एवं निरंतरता को समर्थन प्रदान कर सकती है।

स्नातक शिक्षा में अभिरुचि का महत्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रदान किए गए शैक्षिक लचीलेपन के संदर्भ में और अधिक स्पष्ट हो जाता है। विषय चयन में स्वतंत्रता, बहुविषयक अध्ययन तथा विविध अधिगम अवसर विद्यार्थियों को अपनी व्यक्तिगत रुचियों एवं क्षमताओं के अनुरूप शैक्षिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान कर सकते हैं। ऐसी व्यवस्था में विद्यार्थी अपनी अभिरुचियों को पहचानने, विकसित करने और उन्हें अपने शैक्षिक विकास के साथ जोड़ने में अधिक सक्षम हो सकते हैं। अभिरुचि केवल किसी विषय को पसंद करने तक सीमित नहीं है। इसमें विषय को समझने की जिज्ञासा, सीखने की इच्छा, गतिविधि में आनंद का अनुभव तथा कठिनाई के बावजूद विषय से जुड़े रहने की प्रवृत्ति भी सम्मिलित हो सकती है। इसलिए शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अभिरुचि को अधिगम की प्रारंभिक ऊर्जा के रूप में देखा जा सकता है। जहाँ रुचि अधिगम को अर्थपूर्ण बनाती है, वहीं यह विद्यार्थी में निरंतर प्रयास के लिए आधार भी तैयार कर सकती है।

3.2 अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि

अभिप्रेरणा वह आंतरिक अथवा बाह्य शक्ति है जो विद्यार्थी के व्यवहार को किसी लक्ष्य की दिशा में सक्रिय करती है और उसे प्रयास जारी रखने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा के संदर्भ में अभिप्रेरणा का संबंध इस बात से है कि विद्यार्थी क्यों सीखता है, वह किसी शैक्षिक कार्य में कितना प्रयास करता है तथा कठिनाइयों का सामना करते समय अपने प्रयास को किस सीमा तक बनाए रखता है। उच्च शिक्षा में अभिप्रेरणा का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि स्नातक विद्यार्थियों से अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्तता और आत्म-नियमन की अपेक्षा की जाती है। विद्यालयी स्तर की तुलना में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय में विद्यार्थियों को अपने अध्ययन के लिए अधिक व्यक्तिगत जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। उन्हें समय का प्रबंधन करना, अध्ययन की प्राथमिकताएँ निर्धारित करना, शैक्षिक लक्ष्यों का निर्माण करना तथा विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों के बीच अपने प्रयास को बनाए रखना होता है। इन सभी प्रक्रियाओं में अभिप्रेरणा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अभिप्रेरणा को सामान्यतः आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों में समझा जा सकता है। आंतरिक अभिप्रेरणा में विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया को स्वयं में सार्थक एवं संतोषजनक अनुभव कर सकता है, जबकि बाह्य अभिप्रेरणा में अंक, प्रमाण-पत्र, पुरस्कार, सामाजिक मान्यता या भविष्य के व्यावसायिक अवसर जैसे बाहरी परिणाम महत्वपूर्ण हो सकते हैं। प्रभावी शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य केवल बाहरी पुरस्कारों के माध्यम से विद्यार्थियों को सक्रिय करना नहीं, बल्कि उनमें सीखने के प्रति आंतरिक रुचि, आत्मनिर्भरता एवं उपलब्धि की सकारात्मक भावना विकसित करना भी होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा-दृष्टि अभिप्रेरणा के इस व्यापक स्वरूप को समर्थन प्रदान करती है। जब विद्यार्थियों को अपने अधिगम में विकल्प, सहभागिता और निर्णय लेने के अवसर मिलते हैं, तो उनमें स्वामित्व की भावना विकसित हो सकती है। यह भावना उन्हें अपने अधिगम के प्रति अधिक उत्तरदायी बनाने में सहायक हो सकती है। इसी प्रकार अनुभवात्मक, समस्या-आधारित तथा सक्रिय अधिगम विद्यार्थियों को यह अनुभव प्रदान कर सकता है कि उनका ज्ञान वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में उपयोगी है। ऐसी अनुभूति सीखने के प्रति सकारात्मक अभिप्रेरणा को सुदृढ़ कर सकती है।

अभिप्रेरणा का महत्व केवल अध्ययन प्रारंभ करने तक सीमित नहीं है। शैक्षिक उपलब्धि के लिए निरंतर प्रयास, कठिन विषयों से सामना करने की क्षमता तथा असफलता के बाद पुनः प्रयास करने की प्रवृत्ति आवश्यक होती है। इसलिए अभिप्रेरणा को अधिगम की निरंतरता बनाए रखने वाली महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में समझा जा सकता है। उच्च अभिप्रेरणा वाला विद्यार्थी कठिनाई को अधिगम की प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा मानकर उससे निपटने के लिए अधिक सक्रिय प्रयास कर सकता है।

3.3 मूल्य और शैक्षिक उपलब्धि

मूल्य व्यक्ति के विचारों, निर्णयों और व्यवहार को दिशा देने वाले अपेक्षाकृत स्थायी विश्वास एवं मान्यताएँ हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यों का महत्व इसलिए विशेष है क्योंकि विद्यार्थी का शैक्षिक जीवन केवल ज्ञान अर्जित करने से संबंधित नहीं होता, बल्कि वह अनेक प्रकार के निर्णयों, उत्तरदायित्वों और सामाजिक व्यवहारों से भी जुड़ा होता है। विद्यार्थी किस प्रकार अपने अध्ययन के प्रति उत्तरदायित्व निभाता है, समय का उपयोग करता है, शिक्षकों एवं सहपाठियों के साथ व्यवहार करता है और शैक्षणिक ईमानदारी का पालन करता है—इन सभी पक्षों में मूल्यों की भूमिका देखी जा सकती है।

उत्तरदायित्व, अनुशासन, सत्यनिष्ठा, सहयोग, सम्मान, सहानुभूति और आत्म-नियंत्रण जैसे मूल्य विद्यार्थी के अधिगम व्यवहार को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तरदायित्व की भावना विद्यार्थी को निर्धारित कार्य समय पर पूरा करने के लिए प्रेरित कर सकती है, जबकि अनुशासन नियमित अध्ययन एवं समय-प्रबंधन को समर्थन दे सकता है। इसी प्रकार सत्यनिष्ठा शैक्षणिक कार्यों में ईमानदार प्रयास तथा शैक्षणिक कदाचार से बचने की प्रवृत्ति को मजबूत कर सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के माध्यम से भारतीय एवं मानवीय मूल्यों के विकास पर दिया गया बल इस संदर्भ को विशेष महत्व प्रदान करता है। नीति का व्यापक उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जो ज्ञान एवं कौशल से संपन्न होने के साथ-साथ नैतिक रूप से जागरूक, संवेदनशील, जिम्मेदार और समाज के प्रति प्रतिबद्ध हों। इसलिए उच्च शिक्षा में मूल्यों का विकास केवल नैतिक शिक्षा का अलग विषय नहीं है, बल्कि इसे विद्यार्थी के समग्र शैक्षिक विकास का अभिन्न हिस्सा माना जाना चाहिए। मूल्य विद्यार्थी के आत्म-नियमन को भी प्रभावित कर सकते हैं। आत्म-नियमन का अर्थ विद्यार्थी की उस क्षमता से है जिसके माध्यम से वह अपने व्यवहार, समय, प्रयास एवं अध्ययन संबंधी गतिविधियों को निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप व्यवस्थित करता है। जब विद्यार्थी में उत्तरदायित्व, अनुशासन एवं आत्म-संयम जैसे मूल्य सुदृढ़ होते हैं, तो वह बाहरी निगरानी के अभाव में भी अपने शैक्षिक दायित्वों को पूरा करने के लिए अधिक सक्षम हो सकता है। इस प्रकार मूल्य शैक्षिक जीवन में ऐसी आंतरिक दिशा प्रदान कर सकते हैं जो विद्यार्थी को निरंतर एवं जिम्मेदार अधिगम की ओर ले जाती है।

3.4 अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्यों का समेकित शैक्षिक परिप्रेक्ष्य

अभिरुचि, अभिप्रेरणा और मूल्य तीन अलग-अलग अवधारणाएँ होते हुए भी विद्यार्थी के अधिगम अनुभव में एक-दूसरे के पूरक रूप में कार्य कर सकते हैं। अभिरुचि विद्यार्थी को सीखने की ओर आकर्षित कर सकती है, अभिप्रेरणा उसे सीखने के लिए प्रयास एवं निरंतरता प्रदान कर सकती है और मूल्य उसके प्रयास एवं व्यवहार को जिम्मेदार तथा अनुशासित दिशा दे सकते हैं। इस प्रकार इन तीनों आयामों को केवल पृथक-पृथक विशेषताओं के रूप में देखने के बजाय विद्यार्थी के समग्र शैक्षिक विकास के परिप्रेक्ष्य में समझना अधिक उपयुक्त है।

एक विद्यार्थी किसी विषय में रुचि रख सकता है, लेकिन यदि उसमें प्रयास जारी रखने की पर्याप्त अभिप्रेरणा नहीं है, तो उसकी रुचि अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धि में परिवर्तित नहीं हो सकती। इसी प्रकार विद्यार्थी में उच्च अभिप्रेरणा हो सकती है, लेकिन यदि उसके शैक्षिक व्यवहार को उत्तरदायित्व एवं अनुशासन जैसे सकारात्मक मूल्यों का पर्याप्त समर्थन प्राप्त नहीं है, तो उसका प्रयास निरंतर एवं व्यवस्थित न रह पाए। दूसरी ओर, रुचि, अभिप्रेरणा और सकारात्मक मूल्य एक साथ उपस्थित होने पर विद्यार्थी के अधिगम में सक्रियता, निरंतरता और उत्तरदायित्व का अधिक सुदृढ़ आधार निर्मित हो सकता है।

इस समेकित दृष्टिकोण में **शैक्षिक सहभागिता** एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में सामने आती है। विद्यार्थी की रुचि उसे गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिए आकर्षित कर सकती है, अभिप्रेरणा उसे सक्रिय बने रहने के लिए प्रेरित कर सकती है और मूल्य उसे अपनी शैक्षिक जिम्मेदारियों को गंभीरता से निभाने के लिए दिशा दे सकते हैं। परिणामस्वरूप अध्ययन, अभ्यास, चर्चा, समस्या-समाधान, परियोजना कार्य तथा अन्य अधिगम गतिविधियों में विद्यार्थी की सार्थक सहभागिता बढ़ सकती है। यही सक्रिय एवं निरंतर सहभागिता उच्च गुणवत्ता वाले अधिगम के लिए आधार प्रदान कर सकती है।

इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा-परिणाम के रूप में देखने के बजाय उसे विद्यार्थी की व्यापक अधिगम प्रक्रिया का परिणाम मानना अधिक उपयुक्त है। अभिरुचि अधिगम को अर्थपूर्ण बना सकती है, अभिप्रेरणा उसे गतिशीलता प्रदान कर सकती है और मूल्य उसे उत्तरदायी दिशा दे सकते हैं। यह समेकित दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की उस मूल भावना के अनुरूप है जिसमें शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी के केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रहकर उसके समग्र व्यक्तित्व का विकास करना है।

अतः स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान के संदर्भ में अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्यों का संयुक्त अध्ययन एक उपयोगी सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण इस बात को समझने में सहायता करता है कि विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता केवल वह क्या जानता है, इस पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि वह **क्या सीखना चाहता है, सीखने के लिए कितना प्रयास करता है और अपने शैक्षिक व्यवहार को किन मूल्यों के आधार पर संचालित करता है।** यही व्यापक परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रस्तावित समग्र, विद्यार्थी-केंद्रित एवं मूल्य-आधारित उच्च शिक्षा की अवधारणा को अधिक सार्थक बनाता है।

4. शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान का वैचारिक आधार

स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक बहुआयामी प्रक्रिया का परिणाम है। इसे केवल विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता अथवा परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थी किस प्रकार सीखता है, सीखने के प्रति उसका दृष्टिकोण कैसा है, वह अपने अध्ययन के प्रति कितनी गंभीरता एवं निरंतरता प्रदर्शित करता है तथा अपने शैक्षिक व्यवहार को किन मान्यताओं और मूल्यों द्वारा निर्देशित करता है—ये सभी पक्ष उसकी शैक्षिक प्रगति को प्रभावित कर सकते हैं। इस व्यापक दृष्टिकोण में अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य ऐसे महत्वपूर्ण मनो-शैक्षिक आधार प्रस्तुत करते हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थी के संभावित शैक्षिक प्रदर्शन को समझने का प्रयास किया जा सकता है।

4.1 अभिरुचि से अधिगम-सक्रियता तक

विद्यार्थी की अभिरुचि उसके अधिगम अनुभव की प्रारंभिक दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जिस विषय या गतिविधि के प्रति विद्यार्थी में वास्तविक रुचि होती है, उसमें वह अधिक ध्यान, जिज्ञासा और सक्रियता प्रदर्शित कर सकता है। रुचि विद्यार्थी को केवल निर्धारित कार्य पूरा करने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे विषय की गहराई में जाने, अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने और नए प्रश्नों पर विचार करने के लिए प्रेरित कर सकती है। अभिरुचि और अधिगम-सक्रियता के बीच यह संबंध विशेष रूप से स्नातक शिक्षा में महत्वपूर्ण है। उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को अपने अध्ययन के लिए अधिक व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी पड़ती है। कक्षा में उपलब्ध समय सीमित होने के कारण प्रभावी अधिगम के लिए स्व-अध्ययन, अतिरिक्त पठन, चर्चा एवं अभ्यास आवश्यक होते हैं। यदि विद्यार्थी विषय के प्रति सकारात्मक अभिरुचि रखता है, तो इन गतिविधियों में उसकी स्वैच्छिक सहभागिता बढ़ सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा विद्यार्थियों को विषय चयन एवं अधिगम के विभिन्न अवसरों में अधिक लचीलापन प्रदान करने की दिशा इसी आवश्यकता को समर्थन देती है। विद्यार्थियों को अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुरूप विषयों और अधिगम-अनुभवों से जुड़ने का अवसर मिलने पर शिक्षा उनके लिए अधिक अर्थपूर्ण बन सकती है। इस प्रकार अभिरुचि को विद्यार्थी की अधिगम-सक्रियता का एक महत्वपूर्ण आधार माना जा सकता है।

4.2 अभिप्रेरणा से प्रयास एवं निरंतरता तक

केवल किसी विषय में रुचि होना पर्याप्त नहीं है। शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थी को नियमित रूप से अध्ययन करना, कठिन विषयों का सामना करना, निर्धारित कार्य पूरा करना तथा असफलता या कठिनाई के बाद भी प्रयास जारी रखना पड़ता है। इन प्रक्रियाओं में अभिप्रेरणा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अभिप्रेरणा विद्यार्थी को किसी लक्ष्य की दिशा में कार्य करने के लिए ऊर्जा प्रदान करती है। यह उसके अध्ययन के प्रति प्रयास, दृढ़ता और निरंतरता को प्रभावित कर सकती है। उच्च अभिप्रेरणा वाला विद्यार्थी किसी कठिन कार्य को केवल बाधा के रूप में देखने के बजाय उसे सीखने के अवसर के रूप में ग्रहण कर सकता है। इसके विपरीत अभिप्रेरणा की कमी होने पर विद्यार्थी रुचि होने के बावजूद नियमित प्रयास बनाए रखने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। स्नातक शिक्षा में यह पक्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस स्तर पर विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र एवं आत्म-निर्देशित अधिगम करना होता है। शिक्षक का प्रत्यक्ष नियंत्रण सीमित होता है और विद्यार्थी को अपने अध्ययन के अनेक निर्णय स्वयं लेने पड़ते हैं। ऐसी परिस्थितियों में आंतरिक अभिप्रेरणा, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता तथा आत्म-नियमन विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण आधार बन सकते हैं।

4.3 मूल्यों से उत्तरदायी अधिगम व्यवहार तक

अभिरुचि और अभिप्रेरणा विद्यार्थी को सीखने की ओर आकर्षित एवं सक्रिय कर सकती हैं, लेकिन उसके शैक्षिक व्यवहार को स्थिर एवं उत्तरदायी दिशा देने में मूल्यों की विशेष भूमिका हो सकती है। विद्यार्थी का अध्ययन केवल उसकी व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर नहीं होता; इसमें समय-प्रबंधन, अनुशासन, उत्तरदायित्व, ईमानदारी, सहयोग और आत्म-संयम जैसे व्यवहारात्मक पक्ष भी सम्मिलित होते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी में उत्तरदायित्व की भावना विकसित है, तो वह अपने शैक्षिक कार्यों को गंभीरता से लेने की अधिक संभावना रख सकता है। अनुशासन उसे नियमित अध्ययन एवं समय-प्रबंधन में सहायता कर सकता है। सत्यनिष्ठा उसे शैक्षणिक कार्यों में ईमानदार प्रयास करने के लिए प्रेरित कर सकती है, जबकि सहयोग की भावना समूह-अधिगम एवं सहपाठी सहभागिता को मजबूत कर सकती है।

इस प्रकार मूल्य विद्यार्थी के लिए बाहरी नियमों का केवल पालन कराने वाले साधन नहीं हैं, बल्कि वे उसके व्यवहार को भीतर से दिशा देने वाली आधारभूत मान्यताएँ हो सकते हैं। जब विद्यार्थी में सकारात्मक शैक्षिक एवं मानवीय मूल्य विकसित होते हैं, तो वह बाहरी निगरानी के अभाव में भी अपने अध्ययन एवं उत्तरदायित्वों को व्यवस्थित रूप से निभाने में अधिक सक्षम हो सकता है।

4.4 अधिगम-सक्रियता, प्रयास एवं उत्तरदायित्व का समन्वय

अभिरुचि, अभिप्रेरणा और मूल्य तीनों को एक साथ देखने पर शैक्षिक उपलब्धि की प्रक्रिया को अधिक व्यापक रूप से समझा जा सकता है। अभिरुचि विद्यार्थी को सीखने की ओर आकर्षित करती है, अभिप्रेरणा उसे सीखने के लिए निरंतर प्रयास करने में सहायता करती है और मूल्य उसके प्रयास को उत्तरदायी एवं अनुशासित दिशा प्रदान करते हैं।

इसे निम्न वैचारिक क्रम के माध्यम से समझा जा सकता है—

अभिरुचि→अधिगम के प्रति सक्रियताअभिरुचि→अधिगम के प्रति

सक्रियताअभिप्रेरणा→प्रयास एवं निरंतरताअभिप्रेरणा→प्रयास एवं

निरंतरतामूल्य→उत्तरदायी एवं अनुशासित अधिगम व्यवहारमूल्य→उत्तरदायी एवं अनुशासित अधिगम व्यवहार

इन तीनों प्रक्रियाओं का समेकन—

अभिरुचि + अभिप्रेरणा + मूल्य

↓

सार्थक अधिगम-सक्रियता

↓

शैक्षिक उपलब्धि

यह मॉडल किसी सांख्यिकीय परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उपलब्धि सैद्धांतिक एवं शैक्षिक तर्कों के आधार पर यह स्पष्ट करता है कि विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए उसके संज्ञानात्मक पक्ष के साथ-साथ उसके मनोवैज्ञानिक एवं मूल्यगत पक्षों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

4.5 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ वैचारिक समन्वय

यह वैचारिक आधार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की व्यापक शिक्षा-दृष्टि के साथ स्वाभाविक रूप से जुड़ा है। नीति विद्यार्थियों को उनकी रुचि, क्षमता और आकांक्षाओं के अनुरूप सीखने के अवसर उपलब्ध कराने, शिक्षा को अधिक अनुभवात्मक एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाने तथा ज्ञान के साथ मूल्यों और जीवन-कौशल के विकास पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अभिरुचि को विद्यार्थी की व्यक्तिगत पसंद एवं जिज्ञासा से, अभिप्रेरणा को सक्रिय एवं स्वायत्त अधिगम से तथा मूल्यों को जिम्मेदार एवं नैतिक नागरिकता से जोड़कर देखा जा सकता है। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि का व्यापक अर्थ केवल परीक्षा में सफलता नहीं रह जाता, बल्कि विद्यार्थी के समग्र विकास, प्रभावी अधिगम एवं भविष्य के जीवन के लिए उसकी तैयारी से जुड़ा जाता है। नीति में बहुविषयक शिक्षा और विषयों के चयन में लचीलेपन पर दिया गया बल विद्यार्थियों को अपनी विविध अभिरुचियों के अनुरूप सीखने का अवसर प्रदान कर सकता है। अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण विद्यार्थियों को अधिगम में सक्रिय रूप से सम्मिलित कर सकता है। इसी प्रकार मूल्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों

में उत्तरदायित्व, नैतिकता, संवेदनशीलता एवं सामाजिक चेतना के विकास को समर्थन दे सकती है। इन सभी पक्षों का समन्वय शैक्षिक उपलब्धि की व्यापक समझ को संभव बनाता है।

4.6 पूर्वानुमान की वैचारिक अवधारणा

पूर्वानुमान का अर्थ यहाँ किसी निश्चित परीक्षा-परिणाम को पहले से निर्धारित करना नहीं है। इसके बजाय इसका आशय उन शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक संकेतकों के आधार पर विद्यार्थी की संभावित शैक्षिक उपलब्धि को समझने से है जो उसके अधिगम व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं। इस दृष्टिकोण में अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य विद्यार्थी के वर्तमान अधिगम व्यवहार को समझने के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान कर सकते हैं। यदि विद्यार्थी किसी विषय में रुचि रखता है, सीखने के प्रति आंतरिक रूप से प्रेरित है और अपने शैक्षिक दायित्वों के प्रति उत्तरदायी एवं अनुशासित है, तो उसके प्रभावी अधिगम की संभावना अधिक हो सकती है। इसके विपरीत, अभिरुचि का अभाव, कमजोर अभिप्रेरणा अथवा असंगठित शैक्षिक व्यवहार उसकी अधिगम प्रक्रिया को चुनौती दे सकते हैं। इसलिए इन पक्षों का समग्र अध्ययन विद्यार्थी की संभावित शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है। इस वैचारिक दृष्टिकोण की विशेषता यह है कि यह विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को केवल परिणाम के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसे एक ऐसी प्रक्रिया का परिणाम मानता है जिसमें **रुचि, प्रयास, निरंतरता, उत्तरदायित्व, आत्म-अनुशासन और सार्थक सहभागिता** एक-दूसरे को समर्थन प्रदान करते हैं। यही दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समग्र शिक्षा-दृष्टि को शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा से जोड़ता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान को समझने के लिए एक ऐसी समेकित दृष्टि आवश्यक है जिसमें विद्यार्थी की अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य उसके अधिगम व्यवहार के महत्वपूर्ण आधार के रूप में देखे जाएँ। यह दृष्टिकोण न केवल शैक्षिक उपलब्धि को अधिक व्यापक रूप में समझने में सहायता करता है, बल्कि उच्च शिक्षा में ऐसी शिक्षण व्यवस्था के निर्माण की दिशा भी प्रदान करता है जो विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, आंतरिक प्रेरक शक्तियों तथा नैतिक एवं सामाजिक विकास को समान महत्व देती हो।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि सुदृढ़ करने की रणनीतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना शिक्षा को अधिक विद्यार्थी-केंद्रित, समग्र, लचीला, अनुभवात्मक एवं मूल्य-आधारित बनाना है। इस दृष्टिकोण में शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा परिणामों में सुधार के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि विद्यार्थी की सीखने की क्षमता, सक्रिय सहभागिता, आत्मनिर्भरता, रचनात्मकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक विकास के समग्र परिणाम के रूप में समझा जाना चाहिए। इस व्यापक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ऐसी शैक्षिक रणनीतियों की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों की अभिरुचि को पहचानें, उनकी अभिप्रेरणा को सुदृढ़ करें तथा उनके व्यवहार में सकारात्मक मूल्यों को विकसित करें।

5.1 अभिरुचि-आधारित शिक्षण को प्रोत्साहन

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सुदृढ़ करने के लिए उनकी व्यक्तिगत अभिरुचियों को शिक्षण प्रक्रिया में स्थान देना आवश्यक है। प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की शैली, विषयगत पसंद, जिज्ञासा और भविष्य की आकांक्षाएँ अलग-अलग हो सकती हैं। इसलिए एक समान शिक्षण-पद्धति के स्थान पर ऐसी व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए जिसमें विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों, गतिविधियों और अधिगम-अनुभवों में अपनी रुचि के

अनुसार सहभागिता करने के अवसर प्राप्त हों। स्नातक स्तर पर विषय चयन में लचीलापन, वैकल्पिक पाठ्यक्रम, बहुविषयक अध्ययन, परियोजना कार्य, वैकल्पिक अधिगम गतिविधियाँ तथा रुचि-आधारित कार्य विद्यार्थियों को अपने शैक्षिक अनुभव को व्यक्तिगत अर्थ प्रदान करने में सहायता कर सकते हैं। जब विद्यार्थी यह अनुभव करता है कि उसकी रुचियों और विचारों को शिक्षा में महत्व दिया जा रहा है, तो उसके भीतर अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होने की संभावना बढ़ सकती है। शिक्षकों की भूमिका यहाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। शिक्षक विद्यार्थियों की रुचियों को पहचानने के लिए कक्षा-चर्चा, गतिविधियाँ, परियोजनाओं एवं अनौपचारिक संवाद का उपयोग कर सकते हैं। विषय-वस्तु को विद्यार्थियों के जीवन-अनुभवों और वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ना भी रुचि को बनाए रखने में सहायक हो सकता है।

5.2 अभिप्रेरणा-संवर्धक अधिगम वातावरण

प्रभावी शिक्षा के लिए केवल विषय-वस्तु का ज्ञान पर्याप्त नहीं है; विद्यार्थियों में सीखने की इच्छा एवं निरंतर प्रयास की प्रवृत्ति भी विकसित करनी आवश्यक है। इसके लिए कक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए जिसमें विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और सक्रिय अनुभव करें। प्रश्न पूछने, अपनी बात रखने, नए विचार प्रस्तुत करने और गलतियों से सीखने की स्वतंत्रता विद्यार्थियों की आंतरिक अभिप्रेरणा को सुदृढ़ कर सकती है।

अभिप्रेरणा को बढ़ाने के लिए शिक्षकों द्वारा स्पष्ट एवं प्राप्त करने योग्य अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण, समय पर सकारात्मक प्रतिक्रिया, विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना तथा उनकी प्रगति के प्रति संवेदनशीलता उपयोगी हो सकती है। केवल उच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के बजाय प्रयास, सुधार, रचनात्मकता और निरंतरता को भी महत्व दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को अपने अधिगम के संबंध में छोटे-छोटे निर्णय लेने के अवसर प्रदान करना भी उपयोगी हो सकता है। उदाहरण के लिए, परियोजना के विषय, प्रस्तुतीकरण के माध्यम या अतिरिक्त अध्ययन सामग्री के चयन में सीमित स्वतंत्रता विद्यार्थियों में स्वामित्व एवं उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकती है। ऐसी व्यवस्था राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विद्यार्थी-केंद्रित एवं स्वायत्त अधिगम की भावना के अनुरूप है।

5.3 अनुभवात्मक एवं सक्रिय अधिगम

अभिरुचि एवं अभिप्रेरणा को मजबूत करने के लिए अधिगम को केवल पाठ्यपुस्तक एवं व्याख्यान तक सीमित रखना उचित नहीं है। अनुभवात्मक अधिगम विद्यार्थियों को ज्ञान को वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ने का अवसर प्रदान करता है। परियोजना, प्रयोग, क्षेत्र-अध्ययन, समस्या-समाधान, केस-अध्ययन, समूह-कार्य, चर्चा तथा सामुदायिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने में सहायता कर सकती हैं। जब विद्यार्थी किसी अवधारणा का वास्तविक जीवन में उपयोग देखता है, तो उसके लिए अधिगम अधिक अर्थपूर्ण हो सकता है। उदाहरण के लिए, सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थी स्थानीय सामाजिक समस्या का अध्ययन कर सकते हैं, विज्ञान के विद्यार्थी वास्तविक प्रयोगों के माध्यम से अवधारणाओं को समझ सकते हैं तथा वाणिज्य के विद्यार्थी वास्तविक व्यावसायिक परिस्थितियों का अध्ययन कर सकते हैं। इस प्रकार अनुभवात्मक अधिगम ज्ञान को व्यवहार से जोड़ने का अवसर देता है। ऐसी शिक्षण प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों को केवल उत्तर याद करने के बजाय समस्या को समझने, प्रश्न उठाने, समाधान खोजने और अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इससे अधिगम अधिक सक्रिय एवं स्थायी बन सकता है।

5.4 आत्म-नियमन एवं अध्ययन-अनुशासन का विकास

शैक्षिक उपलब्धि को सुदृढ़ करने के लिए विद्यार्थियों में आत्म-नियमन की क्षमता का विकास आवश्यक है। उच्च शिक्षा में विद्यार्थी को अपने अध्ययन का काफी हिस्सा स्वयं व्यवस्थित करना पड़ता है। इसलिए समय-प्रबंधन, लक्ष्य-निर्धारण, अध्ययन की योजना, प्रगति की समीक्षा तथा अपनी कमियों को पहचानकर सुधार करने की क्षमता विकसित करना आवश्यक है। अभिप्रेरणा और मूल्य इस प्रक्रिया को समर्थन प्रदान कर सकते हैं। यदि विद्यार्थी में अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता के साथ उत्तरदायित्व एवं अनुशासन की भावना भी विकसित होती है, तो वह बाहरी नियंत्रण के बिना अपने अध्ययन को अधिक व्यवस्थित ढंग से संचालित कर सकता है। उच्च शिक्षा संस्थानों को विद्यार्थियों में इन क्षमताओं के विकास के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

5.5 मूल्य-आधारित शिक्षा का सुदृढ़ीकरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक उद्देश्यों में मूल्य-आधारित शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए मूल्यों को केवल किसी एक पाठ्यक्रम या विशेष गतिविधि तक सीमित करने के बजाय उन्हें संपूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समाहित करना आवश्यक है। कक्षा में सहयोगात्मक कार्य, सामुदायिक सहभागिता, सामाजिक सेवा, नैतिक दुविधाओं पर चर्चा, भारतीय ज्ञान परंपरा से परिचय तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों पर चिंतन विद्यार्थियों में मूल्य-चेतना के विकास में सहायक हो सकते हैं। शिक्षक स्वयं भी अपने व्यवहार के माध्यम से सत्यनिष्ठा, समयपालन, सम्मान, निष्पक्षता एवं उत्तरदायित्व का उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। विशेष रूप से शैक्षणिक ईमानदारी को उच्च शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना चाहिए। नकल, अनुचित साधनों का प्रयोग तथा बौद्धिक सामग्री के अनधिकृत उपयोग के प्रति केवल दंडात्मक दृष्टिकोण अपनाने के बजाय विद्यार्थियों में ईमानदार प्रयास और बौद्धिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना अधिक प्रभावी हो सकता है।

5.6 बहुविषयक एवं लचीले अधिगम के अवसर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों के बीच संबंध समझने तथा अपनी विविध अभिरुचियों को विकसित करने का अवसर देती है। स्नातक शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रमों और गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सकता है जिनमें विद्यार्थी अपने मुख्य विषय के साथ अन्य क्षेत्रों से भी ज्ञान प्राप्त कर सकें।

बहुविषयक अधिगम विद्यार्थियों में व्यापक दृष्टिकोण, रचनात्मक चिंतन एवं समस्या-समाधान क्षमता को विकसित कर सकता है। साथ ही, यह उन विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है जिनकी रुचियाँ किसी एक विषय तक सीमित नहीं हैं। इस प्रकार शैक्षिक लचीलापन विद्यार्थी को अपनी व्यक्तिगत क्षमता एवं रुचि के अनुरूप विकास का अवसर प्रदान करता है।

5.7 शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति से आगे बढ़कर मार्गदर्शक, प्रेरक, परामर्शदाता और अधिगम-सुविधाकर्ता की हो जाती है। शिक्षक को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझना, उनकी अभिरुचियों का सम्मान करना, सीखने में आने वाली कठिनाइयों की पहचान

करना तथा उपयुक्त सहायता प्रदान करना आवश्यक है। एक संवेदनशील शिक्षक विद्यार्थी की केवल कमजोरियों पर ध्यान केंद्रित नहीं करता, बल्कि उसकी क्षमताओं एवं संभावनाओं को भी पहचानता है। नियमित प्रतिक्रिया, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, परामर्श और प्रोत्साहन के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके साथ ही शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों के मूल्य-विकास को भी प्रभावित करता है। निष्पक्षता, पारदर्शिता, समयपालन, सम्मानपूर्ण व्यवहार और शैक्षणिक ईमानदारी का पालन विद्यार्थियों के लिए प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसलिए मूल्य-आधारित शिक्षा की सफलता में शिक्षक का व्यक्तित्व और आचरण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

5.8 संस्थागत वातावरण एवं सहयोग

विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि केवल कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया पर निर्भर नहीं करती। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय का समग्र वातावरण भी महत्वपूर्ण है। यदि संस्थान विद्यार्थियों को पर्याप्त पुस्तकालय संसाधन, डिजिटल अधिगम सुविधाएँ, परामर्श, मार्गदर्शन, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ, मानसिक एवं सामाजिक सहयोग तथा सुरक्षित एवं समावेशी वातावरण उपलब्ध कराते हैं, तो विद्यार्थी अपनी क्षमताओं का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं। संस्थागत स्तर पर ऐसी संस्कृति विकसित की जानी चाहिए जिसमें विद्यार्थी अपनी समस्याओं को बिना संकोच व्यक्त कर सकें और उन्हें समय पर सहायता प्राप्त हो। शैक्षणिक मार्गदर्शन, परामर्श एवं मेंटरिंग की प्रभावी व्यवस्था विद्यार्थियों की शैक्षिक निरंतरता को मजबूत कर सकती है।

5.9 शैक्षिक उपलब्धि की व्यापक समझ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर मापना शिक्षा के व्यापक उद्देश्य को सीमित कर सकता है। विद्यार्थी ने क्या सीखा, वह अपने ज्ञान का उपयोग कैसे करता है, समस्या का समाधान किस प्रकार करता है, नए विचार कैसे प्रस्तुत करता है तथा सामाजिक एवं नैतिक परिस्थितियों में अपने ज्ञान का उपयोग किस प्रकार करता है—इन पक्षों को भी महत्व दिया जाना चाहिए। इसलिए मूल्यांकन व्यवस्था को भी अधिक व्यापक एवं सतत बनाया जाना आवश्यक है। परियोजना, प्रस्तुतीकरण, गतिविधि, चर्चा, व्यावहारिक कार्य, समस्या-समाधान तथा अन्य प्रदर्शन-आधारित गतिविधियों को उचित महत्व देकर विद्यार्थियों के वास्तविक अधिगम को समझा जा सकता है। ऐसी मूल्यांकन व्यवस्था विद्यार्थियों को केवल परीक्षा के लिए पढ़ने के बजाय निरंतर सीखने के लिए प्रेरित कर सकती है।

समग्र रूप से देखा जाए तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शैक्षिक उपलब्धि को सुदृढ़ करने के लिए केवल पाठ्यक्रम में परिवर्तन पर्याप्त नहीं है। इसके लिए ऐसी **समग्र अधिगम संस्कृति** का निर्माण आवश्यक है जिसमें विद्यार्थी की अभिरुचि को सम्मान, उसकी अभिप्रेरणा को प्रोत्साहन और उसके मूल्यों को विकास का अवसर प्राप्त हो। अभिरुचि विद्यार्थी को सीखने की ओर आकर्षित कर सकती है, अभिप्रेरणा उसे प्रयास एवं निरंतरता प्रदान कर सकती है तथा सकारात्मक मूल्य उसके व्यवहार को उत्तरदायी एवं अनुशासित दिशा दे सकते हैं। जब इन सभी पक्षों को विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयक अवसर तथा प्रभावी संस्थागत सहयोग के साथ जोड़ा जाता है, तब उच्च शिक्षा वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समग्र एवं परिवर्तनकारी शिक्षा-दृष्टि को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ सकती है।

6. निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं भविष्य की दिशा

6.1 निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय उच्च शिक्षा को अधिक समग्र, विद्यार्थी-केंद्रित, लचीला, बहुविषयक, अनुभवात्मक एवं मूल्य-आधारित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तुत करती है। इस परिवर्तित शैक्षिक दृष्टिकोण में विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों या ग्रेड के संदर्भ में देखना पर्याप्त नहीं है। शैक्षिक उपलब्धि को विद्यार्थी के समग्र अधिगम, सक्रिय सहभागिता, निरंतर प्रयास, आत्म-नियमन, रचनात्मकता तथा ज्ञान के प्रभावी उपयोग के व्यापक संदर्भ में समझना अधिक उपयुक्त है। प्रस्तुत वैचारिक विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि **अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य** विद्यार्थी के शैक्षिक विकास के महत्वपूर्ण मनो-शैक्षिक आधार हो सकते हैं। अभिरुचि विद्यार्थी को सीखने की ओर आकर्षित करने, जिज्ञासा उत्पन्न करने और अधिगम गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता के लिए आधार प्रदान कर सकती है। अभिप्रेरणा विद्यार्थी को निर्धारित लक्ष्यों की दिशा में प्रयास करने, कठिनाइयों के बावजूद निरंतर बने रहने तथा अपने अध्ययन के प्रति प्रतिबद्ध रहने में सहायता कर सकती है। दूसरी ओर, उत्तरदायित्व, अनुशासन, सत्यनिष्ठा, सहयोग एवं आत्म-संयम जैसे मूल्य विद्यार्थी के शैक्षिक व्यवहार को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकते हैं।

इन तीनों आयामों को एक साथ देखने पर शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए अधिक व्यापक दृष्टिकोण विकसित होता है। केवल अभिरुचि होने से प्रभावी अधिगम सुनिश्चित नहीं होता, यदि विद्यार्थी में निरंतर प्रयास की अभिप्रेरणा न हो। इसी प्रकार अभिप्रेरणा के साथ सकारात्मक मूल्य एवं आत्म-अनुशासन का अभाव होने पर प्रयास व्यवस्थित एवं निरंतर न रह सकता है। इसलिए विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति के लिए रुचि, प्रयास, निरंतरता एवं उत्तरदायित्व का संतुलित विकास आवश्यक प्रतीत होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विद्यार्थी-केंद्रित एवं समग्र दृष्टिकोण इन सभी पक्षों को विकसित करने के लिए अनुकूल शैक्षिक आधार प्रस्तुत करता है। विषय चयन में लचीलापन, बहुविषयक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, कौशल विकास, मूल्य-आधारित शिक्षा तथा विद्यार्थी की सक्रिय सहभागिता ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कर सकती हैं जिनमें विद्यार्थी अपनी रुचियों को पहचानने, अपनी सीखने की अभिप्रेरणा को विकसित करने और सकारात्मक मूल्यों को अपने व्यवहार में अपनाने के अवसर प्राप्त कर सके। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं पर आधारित दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थी **क्या सीखता है** के साथ-साथ वह **क्यों सीखता है, सीखने के प्रति उसकी रुचि कितनी है, वह कितनी निरंतरता से प्रयास करता है और अपने शैक्षिक व्यवहार को किन मूल्यों द्वारा निर्देशित करता है**, इन सभी प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है। यही व्यापक दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शिक्षा-दृष्टि के अनुरूप उच्च शिक्षा को अधिक मानवीय, अर्थपूर्ण एवं प्रभावी बनाने में सहायक हो सकता है।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत वैचारिक विश्लेषण उच्च शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करता है। सबसे पहले, शिक्षकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत अभिरुचियों एवं अधिगम आवश्यकताओं को पहचानने की दिशा में अधिक संवेदनशील होना चाहिए। एक ही प्रकार की शिक्षण-पद्धति सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से प्रभावी नहीं हो सकती। इसलिए गतिविधि-आधारित, चर्चा-आधारित, समस्या-समाधान एवं अनुभवात्मक शिक्षण के विविध अवसर उपलब्ध कराना उपयोगी हो सकता है। दूसरे, विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा को बनाए रखने के लिए कक्षा का वातावरण प्रोत्साहनकारी एवं सम्मानपूर्ण होना चाहिए। विद्यार्थियों के केवल अंतिम प्रदर्शन के बजाय उनके

प्रयास, सुधार एवं प्रगति को भी महत्व दिया जाना चाहिए। नियमित एवं रचनात्मक प्रतिक्रिया विद्यार्थियों को अपनी कमियों को पहचानने और उनमें सुधार करने में सहायता कर सकती है। तीसरे, मूल्य-आधारित शिक्षा को किसी एक विषय या विशेष कार्यक्रम तक सीमित रखने के बजाय संपूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। शैक्षणिक ईमानदारी, उत्तरदायित्व, अनुशासन, सहयोग, सम्मान एवं सामाजिक संवेदनशीलता जैसे मूल्यों को कक्षा-कक्ष की गतिविधियों, परियोजना कार्य, सामुदायिक सहभागिता और शिक्षक-विद्यार्थी संवाद के माध्यम से व्यवहारिक रूप दिया जा सकता है।

चौथे, उच्च शिक्षा संस्थानों को ऐसा वातावरण विकसित करना चाहिए जिसमें विद्यार्थी अपनी रुचियों को विकसित करने, अपनी क्षमताओं को पहचानने तथा अपनी शैक्षिक कठिनाइयों के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त करने में सक्षम हों। मेंटoring, शैक्षिक परामर्श, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ, पुस्तकालय एवं डिजिटल संसाधन तथा विविध अधिगम अवसर इस दिशा में उपयोगी हो सकते हैं।

6.3 नीतिगत निहितार्थ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों को शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा को व्यापक बनाना आवश्यक है। नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों को केवल परीक्षा-केंद्रित प्रदर्शन के लिए तैयार करने के बजाय उन्हें स्वतंत्र चिंतन, रचनात्मकता, समस्या-समाधान, नैतिक निर्णय एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए तैयार करना आवश्यक है। उच्च शिक्षा संस्थानों में ऐसी नीतियाँ विकसित की जा सकती हैं जो विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुरूप विषयों एवं गतिविधियों में सहभागिता का अवसर दें। बहुविषयक पाठ्यक्रमों के साथ-साथ परियोजना, शोध-आधारित अधिगम, समुदाय से जुड़ी गतिविधियाँ तथा अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की व्यापक भावना को व्यवहार में रूपांतरित कर सकता है। इसके साथ ही शिक्षक-प्रशिक्षण को भी नई शिक्षा-दृष्टि के अनुरूप विकसित करने की आवश्यकता है। शिक्षकों को केवल विषय-वस्तु के विशेषज्ञ के रूप में नहीं, बल्कि विद्यार्थी की अभिरुचि, अभिप्रेरणा, आत्म-नियमन एवं मूल्य-विकास को समझने वाले मार्गदर्शक के रूप में तैयार किया जाना चाहिए।

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन वैचारिक एवं सैद्धांतिक प्रकृति का है। इसमें प्राथमिक आँकड़ों का संग्रह, प्रतिभागियों का चयन अथवा सांख्यिकीय परीक्षण नहीं किया गया है। इसलिए प्रस्तुत विवेचन को किसी विशिष्ट विद्यार्थी समूह के लिए प्रत्यक्ष अनुभवजन्य निष्कर्ष के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। अभिरुचि, अभिप्रेरणा, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच प्रस्तुत संभावित संबंध मुख्यतः उपलब्धि सैद्धांतिक एवं शैक्षिक तर्कों पर आधारित हैं। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक अन्य पक्षों से भी प्रभावित हो सकती है, जैसे पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ, पूर्व शैक्षिक अनुभव, संस्थागत वातावरण, शिक्षक की प्रभावशीलता, अधिगम संसाधनों की उपलब्धता तथा व्यक्तिगत क्षमताएँ। प्रस्तुत अध्ययन का केंद्र केवल अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्यों पर है; अतः शैक्षिक उपलब्धि की संपूर्ण व्याख्या के लिए अन्य पक्षों पर भी भविष्य के अध्ययनों में ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

6.5 भविष्य के शोध की दिशा

प्रस्तुत वैचारिक ढाँचा भविष्य में अनुभवजन्य अध्ययनों के लिए एक आधार प्रदान कर सकता है। भविष्य के शोध में विभिन्न प्रकार के उच्च शिक्षा संस्थानों, विषय-वर्गों, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों तथा विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमियों से संबंधित स्नातक विद्यार्थियों को सम्मिलित करके इन अवधारणाओं का अधिक व्यापक अध्ययन किया जा सकता है। भविष्य के अध्ययनों में यह भी देखा जा सकता है कि अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य विद्यार्थी की शैक्षिक सहभागिता, आत्म-नियमन तथा अधिगम व्यवहार के माध्यम से किस प्रकार कार्य करते हैं। दीर्घकालिक अध्ययनों के माध्यम से समय के साथ इन पक्षों में होने वाले परिवर्तन तथा उनका शैक्षिक उपलब्धि पर संभावित प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। इसी प्रकार गुणात्मक अध्ययनों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अनुभवों, सीखने की प्राथमिकताओं, अभिप्रेरक स्रोतों तथा मूल्य-आधारित निर्णयों को गहराई से समझा जा सकता है।

6.6 समापन

अंततः, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए एक समग्र एवं विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। अभिरुचि सीखने के प्रति आकर्षण और जिज्ञासा को आधार प्रदान कर सकती है, अभिप्रेरणा प्रयास एवं निरंतरता को सुदृढ़ कर सकती है तथा मूल्य विद्यार्थी के शैक्षिक व्यवहार को उत्तरदायित्व, अनुशासन एवं नैतिकता की दिशा प्रदान कर सकते हैं। इन सभी पक्षों का संतुलित विकास विद्यार्थी को केवल परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने में ही नहीं, बल्कि एक सक्षम, स्वायत्त, उत्तरदायी एवं संवेदनशील व्यक्ति के रूप में विकसित होने में भी सहायता कर सकता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की वास्तविक सफलता केवल पाठ्यक्रमों एवं संस्थागत संरचनाओं में परिवर्तन से निर्धारित नहीं होगी, बल्कि इस बात से भी निर्धारित होगी कि उच्च शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों की **रुचि को पहचानने, उनकी सीखने की अभिप्रेरणा को विकसित करने और उनके भीतर सकारात्मक मूल्यों को सुदृढ़ करने** में कितनी सफल होती है। यही समग्र दृष्टिकोण शैक्षिक उपलब्धि को व्यापक मानवीय विकास से जोड़ते हुए भारतीय उच्च शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी एवं भविष्योपयोगी बनाने की दिशा में आगे ले जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. Ministry of Education, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India. ([Education](#))
2. Hidi, S. (1990). Interest and its contribution as a mental resource for learning. *Review of Educational Research*, 60(4), 549–571. <https://doi.org/10.2307/1170506>
3. Hidi, S. (2006). Interest: A unique motivational variable. *Educational Research Review*, 1(2), 69–82. <https://doi.org/10.1016/j.edurev.2006.09.001> ([ResearchGate](#))
4. Hidi, S., & Renninger, K. A. (2006). The four-phase model of interest development. *Educational Psychologist*, 41(2), 111–127. https://doi.org/10.1207/S15326985EP4102_4
5. Harackiewicz, J. M., Durik, A. M., Barron, K. E., Linnenbrink-Garcia, L., & Tauer, J. M. (2008). The role of achievement goals in the development of interest: Reciprocal relations between achievement goals, interest, and performance. *Journal of Educational Psychology*, 100(1), 105–122. <https://doi.org/10.1037/0022-0663.100.1.105>

6. Hulleman, C. S., Durik, A. M., Schweigert, S. B., & Harackiewicz, J. M. (2008). Task values, achievement goals, and interest: An integrative analysis. *Journal of Educational Psychology*, 100(2), 398–416. <https://doi.org/10.1037/0022-0663.100.2.398>
7. Ryan, R. M., & Deci, E. L. (2000). Self-determination theory and the facilitation of intrinsic motivation, social development, and well-being. *American Psychologist*, 55(1), 68–78. <https://doi.org/10.1037/0003-066X.55.1.68>
8. Deci, E. L., & Ryan, R. M. (2000). The “what” and “why” of goal pursuits: Human needs and the self-determination of behavior. *Psychological Inquiry*, 11(4), 227–268. https://doi.org/10.1207/S15327965PLI1104_01
9. Vallerand, R. J., Blais, M. R., Brière, N. M., & Pelletier, L. G. (1989). Construction et validation de l'échelle de motivation en éducation (EME) [Construction and validation of the Education Motivation Scale]. *Canadian Journal of Behavioural Science/Revue Canadienne des Sciences du Comportement*, 21(3), 323–349. <https://doi.org/10.1037/h0079855>
10. Vallerand, R. J., Pelletier, L. G., Blais, M. R., Brière, N. M., Senécal, C., & Vallières, E. F. (1992). The Academic Motivation Scale: A measure of intrinsic, extrinsic, and amotivation in education. *Educational and Psychological Measurement*, 52(4), 1003–1017. <https://doi.org/10.1177/0013164492052004025> (Sage Journals)
11. Urhahne, D., & Wijnia, L. (2023). Theories of motivation in education: An integrative framework. *Educational Psychology Review*, 35, Article 45. <https://doi.org/10.1007/s10648-023-09767-9>
12. Vu, T. V., Magis-Weinberg, L., Jansen, B. R. J., van Atteveldt, N., Janssen, T. W. P., Lee, N. C., van der Maas, H. L. J., Raijmakers, M. E. J., Sachisthal, M. S. M., & Meeter, M. (2022). Motivation-achievement cycles in learning: A literature review and research agenda. *Educational Psychology Review*, 34, 39–71. <https://doi.org/10.1007/s10648-021-09616-7>
13. Jansen, M., et al. (2022). Which student and instructional variables are most strongly related to academic motivation in K-12 education? A systematic review of meta-analyses. *Psychological Bulletin*, 148(1–2), 1–26. <https://doi.org/10.1037/bul0000354>
14. Richardson, M., Abraham, C., & Bond, R. (2012). Psychological correlates of university students' academic performance: A systematic review and meta-analysis. *Psychological Bulletin*, 138(2), 353–387. <https://doi.org/10.1037/a0026838> (PubMed)
15. Broadbent, J., & Poon, W. L. (2015). Self-regulated learning strategies & academic achievement in online higher education learning environments: A systematic review. *The Internet and Higher Education*, 27, 1–13. <https://doi.org/10.1016/j.iheduc.2015.04.007>
16. Zimmerman, B. J. (2002). Becoming a self-regulated learner: An overview. *Theory Into Practice*, 41(2), 64–70. https://doi.org/10.1207/S15430421TIP4102_2
17. Li, J., Ye, H., Tang, Y., Zhou, Z., & Hu, X. (2018). What are the effects of self-regulation phases and strategies for Chinese students? A meta-analysis of two decades of research of the association between self-regulation and academic performance. *Frontiers in Psychology*, 9, Article 2434. <https://doi.org/10.3389/fpsyg.2018.02434>
18. Xu, Z., Zhao, Y., Liew, J., Zhou, X., & Kogut, A. (2023). Synthesizing research evidence on self-regulated learning and academic achievement in online and blended

- learning environments: A scoping review. *Educational Research Review*, 39, Article 100510. <https://doi.org/10.1016/j.edurev.2023.100510>
19. Schwartz, S. H. (1994). Are there universal aspects in the structure and contents of human values? *Journal of Social Issues*, 50(4), 19–45. <https://doi.org/10.1111/j.1540-4560.1994.tb01196.x>
 20. Schwartz, S. H. (2012). An overview of the Schwartz theory of basic values. *Online Readings in Psychology and Culture*, 2(1), 1–20. <https://doi.org/10.9707/2307-0919.1116>
 21. Singh, S., & Bansal, R. (2026). Sociology and competitive exam aspirants in India: A brief theoretical analysis. *Social Gravity: International Journal of Social Sciences and Humanities*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/1jbrt489>
 22. Yadav, S. S. (2026). Gender, family background and occupational choice: An intersectional sociological analysis. *Social Gravity: International Journal of Social Sciences and Humanities*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/hff78x12>
 23. Awasthi, A., & Yadav, S. S. (2026). स्मार्टफोन उपयोग और स्क्रीन टाइम के संदर्भ में पारंपरिक कौटुंबिक मूल्यों का परिवर्तन: संयुक्त एवं एकल परिवारों में बड़ों के प्रति सम्मान और पारिवारिक संवाद का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन. *Social Gravity: International Journal of Social Sciences and Humanities*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/24rcrn30>
 24. Yadav, A., & Kumar, S. (2026). Nutritional incentives and school access: An empirical study on the impact of mid-day meals on primary school enrollment. *International Journal of Humanities, Social Sciences and Development Studies*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/bp384772>
 25. Pathak, S., & Yadav, S. S. (2026). Information asymmetry in public health schemes: A sociological assessment of PMJAY awareness in rural Budaun, Uttar Pradesh. *International Journal of Humanities, Social Sciences and Development Studies*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/gz1b0818>
 26. Khatoon, R. (2026). From scroll to screen: Cultural memory in transition. *International Journal of Humanities, Social Sciences and Development Studies*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/kkdye964>